IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

—: मानव जीवन में नैतिक मूल्यों का योगदान :—

डॉ. अरुणा
सहायक आचार्य (विद्या संबल योजना)
राजकीय महाविद्यालय पाटोदी (बाड़मेर)

भूमिका—

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा वह समूह के रूप में रहता है जिसे समाज कहते हैं। एक अच्छा समाज वह होता है जहां व्यक्ति भाईचारे, मेल—मिलाप व अच्छे आचरण का अनुसरण करता है और परिस्थितियों के साथ सामंजस्य स्थापित करता है। अच्छे व्यवहार एवं आचरण से व्यक्ति समाज में पद, प्रतिष्ठा तथा मान—सम्मान प्राप्त कर सकता है। समाज आपसी संबंधों का जाल होता है तथा एक व्यक्ति किसी न किसी रूप में दूसरे पर निर्भर रहता है। अतः समाज में अनेक मूल्य निहित रहते है। सहयोग, सहानुभूति, करुणा, मैत्री, कर्त्तव्यनिष्ठा जैसे नैतिक मूल्य सामाजिक जीवन के आधार है तथा इन नैतिक मूल्यों के बिना एक अच्छे समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है।

आदिकाल से ही मनुष्य छोटे—छोटे समूह बना कर रहता था जो कि एक विकास की लम्बी यात्रा तय कर आज विकसित जातिगत समूह का रूप ले चुके है। प्रत्येक समाज के कुछ मानक होते हैं, कुछ आचार संहिताएँ होती हैं और ये आचार—संहिताएँ सामाजिक जीवन का मार्गदर्शन करती है। समाज में रहने वाले हर व्यक्ति को इनका पालन करना चाहिए चाहे वह समाज के भय से करे अथवा स्वेच्छा से। वास्तव में ये आचार—संहिताएँ ही व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित करती है। इन नियमों की अवहेलना होने पर दंड की व्यवस्था भी होती है। दण्ड व्यवस्था सामाजिक स्तर की होती है और कानूनी स्तर पर भी होती है। सामाजिक नियमों का उल्लंघन करने वाले व्यक्ति का सामाजिक बहिष्कार किया जाता है। इससे भी अनुमान लगाया जा सकता है कि मूल्यों का पालन व्यक्ति के लिए आवश्यक होता है। वर्तमान

परिप्रेक्ष्य में मूल्यों की दशा सोचनीय बनी हुई है। इन्हें पुनः स्थापित करने हेतु सामाजिक सन्दर्भ में इन्हें खोजना आवश्यक हो जाता है।

मूल्यों के निर्धारण में मानव–कल्याण की भावना निहित होती है जिसके द्वारा मानवता की स्थापना होती है। यही कारण है कि विभिन्न देशों व जातियों के धर्म, दर्शन एवं संस्कृति में भिन्नता होते हुए भी सार्वजनिक हित के सम्बन्ध में, धारणाओं में सभी सम्प्रदायों में एकरूपता पाई जाती है। मूल्य (टंसनम) शब्द की उत्पत्ति लैटिन के 'टंसनम' शब्द से मानी जाती है, जो वस्तु की कीमत, जन, विशेषता, गुण या उपयोगिता को व्यक्त करता है। साधारण शब्दों में नैतिक मूल्य एक ऐसी आचरण संहिता या सद्गुणों का समावेश है, जिसे अपनाकर व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का विकास कर समाज में उच्च स्थान प्राप्त करता है तथा प्रभावशाली बनता है। इस प्रकार मूल्यों में मानव की धारणायें, विश्वास, विचार, मनोवृत्ति एवं आस्था आदि अंतर्निहित होते हैं। वस्तुतः मूल्य एक प्रकार की मानव की अंतः नियंन्त्रित व्यवस्थित ऊर्जा है।

नैतिक मूल्यों का प्रभाव–

रोहित मेहता के अनुसार – ''मूल्य न तो किसी मशीन द्वारा उत्पादित वस्तु है और न ही यह किसी सरकार द्वारा निर्मित कानून है। मूल्य तो जीवन के प्रति एक गुण है, एक अन्तर्दृष्टि है, एक अवधारणा है, एक दृष्टिकोण है। **डॉ– आनन्द प्रकाश दीक्षित के अनुसार–** 'मूल्य' वह है जिसके पीछे हम चलना चाहें, उपलब्धि के योग्य समझें, और उसे जीवन में महत्व दे सकें।" मूल्य को एक मानक के रूप में माना गया है जो व्यक्ति के व्यवहार का नियामक होता है। मूल्य जीवन के आवश्यक एवं अपरिहार्य अंग है तथा इनके अभाव में न तो वैयक्तिक जीवन अच्छा हो सकता है और न ही सामाजिक जीवन। अतः मूल्य जीवन व्यवहार के सकारात्मक प्रेरक तत्त्व है जो व्यक्ति का मार्गदर्शन करते है।

मूल्यों की स्थापना में सामाजिक अध्ययन की महती भूमिका है **श्री फोरेस्टर के अनुसारः**– सामाजिक अध्ययन समाज का अध्ययन हैं और इसका मुख्य उद्धेष्य विद्यार्थियों को उस संसार के समझने में सहायता प्रदान करना हैं जिसमें उन्हें रहना हैं ताकि वे उसके उत्तरदायी सदस्य बन सकें इसका ध्येय विवेचनात्मक चिंतन तथा सामाजिक परिवर्तन की तत्परता को प्रोत्साहित करना, समाज कल्याण के लिए कार्य करने की आदत को विकसित करना, दूसरी संस्कृतियों के प्रति

प्रषंसात्मक दृष्टिकोण रखना तथा यह अनुभव कराना हैं कि सभी मानव तथा राष्ट्र एक दूसरे पर आश्रित हैं। सामान्यतः यह कहा जाता हैं कि नैतिक मूल्यों को सिखाया नहीं जा सकता बल्कि उन्हें आत्मसात किया जाता हैं नैतिक मूल्य वास्तव में आचरण होते हैं मूल्यों को आचार–विचार में

किसी भी समाज को विशिष्ठ स्थान पर प्रतिष्ठित करने के लिए जीवन मूल्यों का गहरा महत्व होता है। जिस समाज के मूल्य मनुष्य के आध्यात्मिक एवं भौतिक विकास के विविध सोपानो ं को इंगित करके उसे प्रगति की ओर अग्रसर करने में सहायक बनते हैं, उस समाज एवं राष्ट्र की गणना विश्व के महानतम सुसंस्कृत राष्ट्रों में की जाती है। दूसरे शब्दों में सामाजिक नैतिक मूल्य किसी समाज के प्रचलित वे आदर्श और लक्ष्य होते है। जिनके प्रति समाज के सदस्य श्रद्धा व्यक्त करते हैं और जिन्हें सामाजिक जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है। इन जीवन मूल्यों से मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण होता है और सामाजिक रूप में मनुष्य की संस्कारशीलता समष्टिगत् आधर पर राष्ट्रीय आदर्श के रूप मे ं स्थापित होती है।

जीवन दर्शन एवं नैतिक मूल्य–

जीवन दर्शन से यहां अभिप्राय मनुष्य को अपने आपको पहचानने जानने से है। जब तक वह अपने आप को नहीं जानेगा तब तक वह अन्यों (परिवार–समाज) को कैसे जान पाएगा। इसे लौकिक दर्शन भी कहते हैं। नैतिक मूल्यों में जीवन दर्शन की बातें बहुतायत में पाई जाती है जिन्हें समाज के लोक जीवन मर्मज्ञों ने लोक साहित्यों में समाहित कर समाज को प्रेरित एवं जागरूक करने का प्रयास किया है जिससे मारवाड़ ही नहीं देश के सार्वजनिक जीवनों को उद्बोधन मिल सके और जिससे वे अपने और समाज–परिवार में उल्लास और प्रसन्नता का वातावरण बना सके। नैतिक मूल्यों की यही तो अवधारणा होती है। जिससे व्यक्ति खुशी–खुशी अपना–अपना जीवनयापन करते हुए उन्नति पथ पर आगे बढ़ूंढ सके। इस तरह से नैतिक मूल्य मानव के जीवन–दर्शन के लौकिक पक्षों से अधिकांशतः जुड़े हुए हैं और वे उनके नैतिक रूपों को उजागर करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिकाएं अदा करते हैं।

जीवन–दर्शन व्यक्ति की जीवन विषायक चेतना है। मानवीय जगत् मानव का आत्मज्ञान है इसी आत्मज्ञान की विवृत्ति उसका जीवन दर्शन है। वह जिस रूप में जीवन को समझता है वही उसका दर्शन है। मानवीय जीवन विचारों एवं भावों से प्रेरित होता हैं अतः समग्रतः व्यक्ति जीवन के प्रति क्या दृष्टिकोण

रखता है, जीवन के प्रति धारणाएं–मान्यताएं क्या है? वे सिद्धान्त जिनके जीवन द्वारा वह व्यक्ति–विशेष स्वयं जीवनयापन करता है और समाज को भी जिन सिद्धान्तों के प्रतिमान के अनुसार जीवनयापन करने का प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से संकेत करता है, उसके जीवन दर्शन का निर्माण करते है।

निष्कर्ष–

मनुष्य से समाज का निमार्ण होता है लेकिन एक सभ्य समाज वही कहलाता है जहां लोग एक–दूसरे के सुख–दुःख के भागीदार होते हैं तथा जहां जीवन पारस्परिक सहयोग से चलता है। समाज में सौहार्द और समरसता बनाए रखने के लिए प्राचीन विद्वानों ने हमारे लिए कुछ ऐसे नियमों का प्रतिपादन किया हे जिनका उल्लंघन अपराध माना जाता है। ये नियम ही हमारे नैतिक मूल्य कहलाते हैं। भारतीय जीवन दर्शन में नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों का बहुत महत्व है। हमारे नैतिक और सामाजिक मूल्य हमारे जीवन को उच्चता प्रदान करते हैं तथा इन मूल्यों पर चल कर ही व्यक्ति दूसरों के लिए आदर्श प्रस्तुत कर सकता है। नैतिक मूल्य हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं क्योंकि व्यक्ति नैतिक मूल्यों के माध्यम से ही हमारे आदर्श और जीवन मूल्यों को समझ सकता है। नैतिक मूल्यों में हमारी लोक संस्कृति की स्पष्ट झलक देखने को मिलती है। यदि किसी अंचल के इतिहास एवं संस्कृति के बारे में जानना हो तो वहां के नैतिक मूल्यों का अध्ययन आवश्यक हो जाता है। लोकजीवन हमारे जीवन के लिए बहुत उपयोगी है क्योंकि जहां एक ओर व्यक्ति अपने सुख–दुःख, हर्ष–विषाद और अपने अर्न्तमन की भावनाओं को नैतिक मूल्यों के माध्यम से प्रकट कर सकता है तो वहीं दूसरी ओर नैतिक मूल्यों के माध्यम से ही समाज को गतिशील बनाये रखा जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. डॉ– आनन्द दीक्षित : हिन्दी साहित्य में जीवन मूल्य
2. भोलानाथ तिवारी : हिन्दी नीतिकाव्य
3. डॉ. रामस्वरूप शास्त्री : हिन्दी में नीतिकाव्य का विकास
4. आर.के. मुखर्जी : द सोशल स्ट्रेचर ऑफ वेल्यू
5. डॉ. बुद्धसेन नीहार : विश्व कवि निराला
6. रवीन्द्र भ्रमर : हिन्दी भक्ति साहित्य में लोकतत्व
7. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी : विचार और वितर्क